चार-दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मलेन

आईसीओबीएच 2026 (ICOBH-2026)

समुद्र-विज्ञान (Oceanography) और जलीय मानविकी (Blue Humanities): विभिन्न द्वीपों और जल-निकायों का साहित्यिक-भौगोलिक विवेचन

दिसंबर 09-12, 2026

अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह, भारत

ईएफ़एसएलई के बारे में

ईएफ़एसएलई (Ecosophical Foundation for the Study of Literature and Environment) एक गैर-लाभकारी संगठन तथा एक अंतरराष्ट्रीय मुक्त अकादमिक मंच है, जो बुद्धिजीवियों, शिक्षाविदों, पर्यावरण कार्यकर्ताओं, प्रकृतिविदों, प्रकृति-प्रेमियों तथा इन प्रश्नों के प्रति गंभीर रूप से समर्पित व्यक्तियों के बीच सृजनात्मक संवाद को प्रोत्साहित करता है। यह संगठन परस्पर भिन्नताओं और दृष्टिकोणों के प्रति उदार, संवादशील और अविद्वेषी दृष्टि को महत्व देता है।

यह संस्था साहित्य और पर्यावरण के साथ जेंडर तथा मानवाधिकार जैसे दो महत्वपूर्ण पहलुओं को समावेशित करती है। यह पहल मुख्यतः डॉ. ऋषिकेश कुमार सिंह द्वारा प्रेरित है, जिसे वे एलईजीएच आंदोलन (साहित्य, पर्यावरण, लिंगभेद और मानवाधिकार) — एक सामाजिक-पर्यावरणीय साहित्यिक आंदोलन — के रूप में अभिहित करते हैं। अपने प्रकार का यह पहला प्रयास है, जिसमें इन चारों पहलुओं को एक साथ रखा गया है; यही इसकी विशिष्टता और प्रासंगिकता है।

यद्यपि 'पर्यावरण और साहित्य' इसका मूल सरोकार है, तथापि यहाँ पर्यावरण का आशय मानव-पर्यावरण से भी है, जिसके अंतर्गत समाज के सर्वाधिक वंचित वर्गों के प्रति संवेदनशीलता निहित है। इसमें महिलाओं का सशक्तिकरण, बच्चों की समग्र उन्नति की चिंता, तथा समाज के सभी वंचित वर्गों के लिए सतत आजीविका की आकांक्षा सम्मिलित है। इन समस्त अध्ययन क्षेत्रों को समेकित करते हुए यह संगठन अपने प्रकार का विश्व का सबसे बड़ा मंच बनने की दिशा में अग्रसर है। अंतर्विषयक और बहुविषयक दृष्टियाँ इसकी आधारभूमि हैं। भारत के सभी 28 राज्यों और 8 केंद्रशासित प्रदेशों में इसकी कार्यकारी परिषदें हैं। साथ ही यह विश्व के 18 देशों में कार्यरत है, जबकि 7 अन्य देशों में इसके विस्तार प्रस्तावित हैं।

पांडिचेरी विश्वविद्यालय के बारे में (समुद्र अध्ययन और समुद्री जीवविज्ञान विभाग)

पांडिचेरी विश्वविद्यालय भारत सरकार द्वारा 1985 में स्थापित एक प्रमुख केंद्रीय विश्वविद्यालय है। पुडुचेरी के कालापेट में ईस्ट कोस्ट रोड के किनारे स्थित इसका 800 एकड़ का वाई-फ़ाई-सुसज्जित परिसर अपने शोध-समृद्ध शिक्षण और शांत समुद्री परिवेश के लिए प्रसिद्ध है। इसे राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) द्वारा "A+" ग्रेड प्राप्त है और यह निरंतर भारत के शीर्ष विश्वविद्यालयों में एनआईआरएफ़ रैंकिंग में स्थान पाता रहा है।

पांडिचेरी विश्वविद्यालय का समुद्र अध्ययन और समुद्री जीवविज्ञान विभाग अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह के पोर्ट ब्लेयर परिसर में स्थित एक प्रतिष्ठित संस्थान है। 2004 में स्थापित यह विभाग एम.एससी. और पीएच.डी. कार्यक्रम संचालित करता है, जो इस क्षेत्र की समृद्ध और विविध समुद्री पारिस्थितिकियों का उपयोग करते हैं। अपेक्षाकृत निर्मल तथा घने वनाच्छादित समुद्री परिवेश में स्थित यह संस्थान 572 द्वीपों, विशिष्ट प्रवाल भित्तियों और विस्तृत मैंग्रोव तंत्रों के निकट होने के कारण अद्वितीय शैक्षिक-संशोधन अवसर प्रदान करता है।

भारतीय मानव-विज्ञान सर्वेक्षण (एएनएसआई- एंथ्रोपोलोजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया), श्री विजय पुरम के बारे में

भारतीय मानव-विज्ञान सर्वेक्षण (एएनएसआई), भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अधीन एक अग्रणी राष्ट्रीय अनुसंधान संस्थान है। 1945 में स्थापित और कोलकाता स्थित यह संस्था सरकारी ढाँचे में समग्र जैव-सांस्कृतिक और सामाजिक-सांस्कृतिक मानव-विज्ञान संबंधी शोध हेतु विश्व में अपने प्रकार की एकमात्र संस्था मानी जाती है।

अंडमान में 1951 में स्थापित इसका क्षेत्रीय केंद्र अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह की आदिवासी तथा बसाहटी आबादियों के सामाजिक-सांस्कृतिक और जैविक पक्षों का अध्ययन करता है। पोर्ट ब्लेयर स्थित इसका क्षेत्रीय मानव-विज्ञान संग्रहालय द्वीपों के पुरापाषाण और नवपाषाण निवासियों तथा समकालीन जनजातीय समुदायों, जैसे महान अंडमान निवासी (ग्रेट अंडमानीज़), जारवा और सेंटिनल आदिवासी से संबंधित महत्वपूर्ण प्रदर्श प्रस्तुत करता है।

अवधारणा-नोट:

अध्ययन के दो विशिष्ट क्षेत्रों—समुद्र-विज्ञान और जलीय मानविकी (ब्लू ह्यूमैनिटीज़)—का यह संगम, द्वीपों और जल-निकायों की साहित्यिक भूगोल की पड़ताल करते हुए, बहुविषयक और अंतर्विषयक दृष्टियों के लिए एक नया द्वार खोलता है। समकालीन शोध में मानविकी के क्षेत्र में जिस प्रवृत्ति को “ओशनिक टर्न”, “मरीन/ अक्वेटिक टर्न” या “ब्लू टर्न” कहा जा रहा है, उसके अंतर्गत महासागर, समुद्र और अन्य जलीय अवकाशों को अब केवल सजावटी पृष्ठभूमि या रूपक के रूप में नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, पारिस्थितिक और आध्यात्मिक अर्थ-निर्माण के सक्रिय स्थलों के रूप में देखा जा रहा है।

जलीय मानविकी (ब्लू ह्यूमैनिटीज़) और समुद्र-विज्ञान के क्षेत्रों में एक साथ घटित इस समानांतर परिवर्तन का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि समुद्र-विज्ञान अब केवल प्रत्यक्षवादी जल-मानचित्रण तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वह जलीय संसार से मानव जीवन के सामाजिक, राजनीतिक, प्रतीकात्मक तथा सांस्कृतिक आयामों से भी संवाद करने लगा है। समुद्र-विज्ञान संबंधी आँकड़ों को साहित्यिक और सांस्कृतिक विश्लेषण के साथ संयोजित करते हुए यह सम्मेलन उन जटिल प्रश्नों के उत्तर तलाशना चाहता है, जिनके माध्यम से यह समझा जा सके कि द्वीप, तटरेखाएँ और आंतरिक जल-प्रदेश किस प्रकार अर्थ-संपन्न साहित्यिक भूगोल का रूप लेते हैं और मानवकेंद्रित तथा पारिस्थितिकी केंद्रित विश्व-दृष्टियों को किस प्रकार आकार देते हैं।

यह भी विचाराधीन है कि गहरे समुद्र के अध्ययन में सागरीय (थैलेसिक) और समुद्री जानवरों (पेलैजिक) परिप्रेक्ष्य के साथ ऐसी दिशा खुलती है, जहाँ सृजनात्मकता समुद्री-दृश्यों और पारिस्थितिक-वैज्ञानिक कल्पना को साहित्यिक आलोचना तथा भौगोलिक हस्तक्षेपों से एक साथ जोड़ती है।

जलीय मानविकी (ब्लू ह्यूमैनिटीज़) भूमि-केंद्रित मानव अध्ययन की सीमाओं के विरुद्ध एक अत्यंत आवश्यक प्रत्युत्तर के रूप में उभरती है। इस दृष्टिकोण ने अक्सर भूमि को इतिहास, राजनीति और पहचान के प्राथमिक मंच के रूप में केंद्रित किया है। सर्पिल ओपरमैन, स्टीव मेंट्ज़ और एलिज़ाबेथ डीलौग्रे जैसे विद्वानों के अनुसार, महासागर एक वैश्विक माध्यम के रूप में कार्य करता है

जो विभिन्न भूगोलों, संस्कृतियों और कालगत अवस्थाओं को जोड़ता है। महासागर को मात्र भूमि-खंडों के बीच स्थित रिक्त स्थान या वाणिज्य और विस्तार का बाजार मानना उपनिवेशवादी, दोहनपरक और मानवकेन्द्रित ज्ञान-रूपों को बनाए रखता है।

इस परिप्रेक्ष्य में जलीय मानविकी (ब्लू ह्यूमैनिटीज़), पारिस्थितिक आलोचना, पर्यावरण अध्ययन, समुद्री इतिहास और उत्तर-औपनिवेशिक सिद्धांत की सहायता से महासागर को स्मृति, गतिकता और प्रजातियों के बीच संबंधों के एक जीवंत स्थल के रूप में रेखांकित करती है। दूसरी ओर, साहित्यिक भूगोल ने यह समझने का प्रयास किया है कि पाठ किस प्रकार स्थान को रूपायित करते हैं, विशेषतः द्वीपों, द्वीपसमूहों और जल-निकायों के बारंबार चित्रण के माध्यम से। जेम्स नील जैसे विद्वान इस बात पर बल देते हैं कि काल्पनिक द्वीप स्वामित्व, पृथकता और परिवर्तन के विशिष्ट साहित्यिक स्थल होते हैं।

इन्हीं विचारों के आधार पर यह परियोजना द्वीपों और जल-निकायों की साहित्यिक भूगोल को समुद्र-विज्ञान संबंधी प्रतिमानों के साथ जोड़ते हुए भौतिक विज्ञान और व्याख्यात्मक मानविकी के बीच एक अंतःविषयी सेतु का निर्माण करना चाहती है। यह सम्मेलन जल-निकायों की वैज्ञानिक समझ—जो जलीय गतिकी, ऊष्म-लवण परिसंचरण और पारिस्थितिक मॉडलिंग पर आधारित है—और महासागरों, समुद्रों, नदियों तथा द्वीपों के साहित्यिक निरूपण—जो रूपक, स्मृति और मिथक के स्थलों के रूप में सामने आते हैं, के बीच विद्यमान अंतराल का विश्लेषण करना चाहता है।

जहाँ समुद्र-विज्ञान जल-पर्यावरणों की अंतर्संबद्धता को बढ़ते हुए क्रम में स्वीकार कर रहा है, वहीं साहित्यिक आलोचना में अक्सर इस जटिलता का समुचित समावेश नहीं मिलता। साहित्यिक आलोचना जल को प्रायः एक प्रतीकात्मक या सौंदर्यपरक तत्व के रूप में देखती है, न कि एक वास्तविक भौतिक शक्ति के रूप में। दूसरी ओर, मानविकी-आधारित अध्ययन जल के मानचित्रण, वर्णन और वस्तुकरण के सांस्कृतिक, राजनीतिक और नैतिक पक्षों को उजागर कर समुद्र-विज्ञान की कथाओं को अधिक समृद्ध बना सकते हैं।

यह बौद्धिक संगोष्ठी द्वीपों और जल-निकायों के साहित्यिक निरूपणों के इतिहास का अनुशीलन करना चाहती है—शास्त्रीय और आरंभिक आधुनिक ग्रंथों से लेकर समकालीन महासागरीय साहित्य तक विशेष ध्यान इस बात पर होगा कि आर्किपेलागो, तटीय पट्टी, और जल-गर्भीय गहराइयों जैसे स्थानिक विचार आख्यानों में कैसे निर्मित होते हैं। साथ ही, यह भी विश्लेषित किया जाएगा कि समुद्री मार्गों, जलवायु परिवर्तन पूर्वानुमानों और महासागरीय अम्लीकरण जैसी समुद्र-विज्ञान संबंधी चर्चाएँ और आँकड़े साहित्यिक निरूपणों में कैसे रूपायित या अदृश्य कर दिए जाते हैं।

यह सम्मेलन अंततः ऐसा सैद्धांतिक ढाँचा विकसित करने का भी प्रयास करता है जिसके माध्यम से द्वीपों और जल-निकायों को पदार्थ और अर्थ के अंतर्संबद्ध स्थलों के रूप में पढ़ा जा सके। इसके लिए जटिल महासागरीय अध्ययन, जलीय मानविकी (ब्लू ह्यूमैनिटीज़) और स्थानिक साहित्यिक अध्ययन की सहायता ली जाएगी। साथ ही, जलवायु संकट, महासागरीय शासन तथा महासागर को लेकर आदिवासी और उत्तर-औपनिवेशिक ज्ञान-परंपराओं के संदर्भ में समुद्र-विज्ञान और जलीय मानविकी (ब्लू ह्यूमैनिटीज़) के संयोजन के नैतिक तथा राजनीतिक परिणामों की भी जाँच की जाएगी।

ईएफ़एसएलई का पाँचवाँ अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन (आईसीओबीएच 2026) समुद्र-विज्ञान और जलीय मानविकी (ब्लू ह्यूमैनिटीज़) के अंतःविषयी संबंधों का जीवंत परीक्षण करना चाहता है, ताकि जल को केवल वैज्ञानिक अध्ययन-वस्तु के रूप में नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक कारक के रूप में पुनर्विचारित किया जा सके, जो मानवीय अनुभव, आख्यान और मूल्य-प्रणालियों को आकार देता है। द्वीपों और जल-निकायों की साहित्यिक भूगोल के माध्यम से विद्वान ऐसे बहुविध ज्ञान-रूपों को उद्घाटित कर सकते हैं, जो अनुभवजन्य आँकड़ों को देहधारी ज्ञान, नैतिक चिंतन और कल्पनाशील अभिव्यक्ति से जोड़ते हैं।

उप-विषय:

बहुविषयक और अंतर्विषयक प्रकृति वाले इस सम्मेलन में सभी विषयों से मौलिक शोध-पत्र आमंत्रित हैं। निम्नलिखित उप-विषय संकेतात्मक हैं; चर्चा इन तक सीमित नहीं है।

1. समुद्र-विज्ञान, पर्यावरणीय संकट और समुद्री तंत्र

1. गहरे समुद्र के माइक्रोबायोम, जलवायु प्रतिपुष्टि और महासागरीय आख्यानशीलता
2. तटीय मानविकी में समुद्री सामाजिक-पारिस्थितिक सीमारेखाएँ
3. महासागरीय संकलन, पर्यावरणीय संकट और बहु-प्रजातीय सार्वजनिकता/ संयोजन
4. भावी महासागरीय अनुकूलन, न्याय और आख्यान-आधारित मॉडलिंग
5. जलीय मानव (होमो अक्वाटिकस): मानव–महासागर सह-अस्तित्व एक आलोचनात्मक कल्पनादर्श के रूप में
6. पर्यावरणीय संकट और जलवायु परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में महासागरीय आख्यान
7. पारिस्थितिकीय आलोचना, समुद्री पारिस्थितिकी और जलवायु परिवर्तन
8. महासागरीय त्रि-आयामी (3डी) छवि निर्माण और पर्यावरणीय अनुश्रवण
9. जल-नैतिकता का अंतर्विषयी विमर्श: महासागरीय अम्लीकरण और कोरल ब्लीचिंग का समेकन
10. पर्यावरणीय नस्लवाद, जलवायु परिवर्तन, तटीय असुरक्षा और पर्यावरणीय न्याय: एक नैतिक विमर्श

2. जैव-सांस्कृतिक निरंतरताएँ और अविभाज्य स्वदेशी समुद्री नृजातीय पारिस्थितिकी

1. भारतीय ज्ञान-परंपरा, पवित्र परिदृश्य और द्वीपीय जनजातियों में समुद्र-मैत्री
2. अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूहों के ओंगे, शोमपेन, जारवा और अन्य जनजातीय समुदायों की पारंपरिक प्रथाओं का मानववैज्ञानिक अध्ययन

3. मौखिक परंपराएँ सांस्कृतिक अभिलेखागार के रूप में: अंडमान-निकोबार द्वीपसमूह में स्वदेशी पारिस्थितिक ज्ञान का मानचित्रण
4. निकोबारी और अन्य द्वीपीय समुदायों में पारंपरिक मत्स्य-ज्ञान और समुद्री सांस्कृतिक धरोहर
5. अनुष्ठान, आस्था और जैव-विविधता: द्वीपों की स्वदेशी विश्व-दृष्टियों और पर्यावरणीय नैतिकता का अध्ययन
6. अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूहों की स्वदेशी बस्तियों की पारंपरिक वास्तुकला और पर्यावरणीय बुद्धिमत्ता
7. सांस्कृतिक प्रत्यास्थता और पर्यावरणीय परिवर्तन: द्वीपों में पारिस्थितिक विघटन के प्रति स्वदेशी दायित्व
8. जलवायु और आवासीय परिवर्तन के प्रति जैव-सांस्कृतिक प्रतिक्रियाएँ
9. अंडमान एवं निकोबार की जनजातीय समुदायों की पारंपरिक उपचार-पद्धतियों का नृवंशात्मक अध्ययन
10. समुद्री पारिस्थितिकी और स्वदेशी जैव-सांस्कृतिक विश्लेषण: नृजातीय भाषा-विज्ञान के दृष्टिकोण से

3. महासागरीय कल्पनाएँ और साहित्यिक भूगोल

1. महासागरीय प्रतीकवाद, स्मृति और सांस्कृतिक आख्यानों की पड़ताल
2. ज्वारांतर साहित्य और तटीय रूपांतरण: कला और सांस्कृतिक अध्ययन
3. द्वीपीय साहित्य में समुद्री एकांत: सांस्कृतिक ज्ञानमीमांसा
4. समुद्री कल्पनाएँ और सांस्कृतिक स्मृति
5. मौखिक महाकाव्यों में सुनामी की प्रतिध्वनियाँ
6. अंडमान-निकोबार जनजातीय समुद्री कल्पनाएँ: तरंगों, लहरों और स्वदेशी नौसंचालन-ज्ञान की मौखिक भूगोल
7. समुद्री-दृश्य और स्थानिक अध्ययन
8. जल की भावात्मक भूगोल
9. जल-तल संसार और पनडुब्बी कल्पनाएँ
10. महासागरीय ज्ञानमीमांसा और समकालीन लेखन एवं आलोचना

4. तलीय पारिस्थितिकी और तलीय जीवविज्ञान

1. नवीकरणीय ऊर्जा की तलीय अवसंरचनाएँ

2. ज्ञानमीमांसात्मक पूर्वाग्रह और “अनसुना” तलीय डाटा
3. गहरे समुद्री तल का भावात्मक जीवन
4. अँधेरे में जीवन-इतिहास: अल्पज्ञात तलीय प्रजातियों की जीवनी
5. भू-आकृतिक कारकों के रूप में तलीय जीव-देह
6. सूक्ष्म तलीय जीव और अदृश्यता की नैतिकता
7. तलीय साहित्य और खंडित समुद्री-दृश्य ज्ञान

5. काल्पनिक तथा प्रदूषण-केंद्रित साहित्य

1. कल्पना साहित्य में परिमाणात्मक समुद्र-विज्ञान
2. माइक्रोप्लास्टिक काव्यशास्त्र और महासागरीय अपशिष्ट: प्लास्टिक प्रदूषण के साहित्यिक निरूपण
3. महासागरीय धाराओं के जल-नारीवादी दृष्टिकोण: जलवायु कथा-साहित्य में लैंगिक प्रवाह
4. द्वीपीय लोककथाओं में जैवदीप्तिमान बिंब: आलोकित समुद्र एक अलौकिक प्रतीक के रूप में
5. अधोमुख क्षेत्र की मिथकीय संरचनाएँ: साहित्यिक भूगोल में विवर्तनिक प्लेटों की टकराव
6. नैतिकता और महासागरीय शासन
7. समुद्री प्रदुषण

6. ध्वनिकता और जलवायु दोलन

1. व्हेल-गायन की ध्वनिक पारिस्थितिकियाँ: समुद्री ध्वनि-अध्ययन में ध्वनि परिदृश्य
2. महासागरीय रहस्यमयी जीव और उत्तर-मानवीय संकर रूप: मिथकीय समुद्री जीव और गुप्तजीव प्राणी विज्ञान
3. छोटा लड़का या क्राइस्ट चाइल्ड (एल नीनो) आख्यान और मानसूनी साहित्य
4. डूबी हुई पुस्तकालयों के जल-औपनिवेशिक अभिलेख: जलमग्न पाठ्य-सामग्री और साम्राज्यवादी इतिहास
5. महासागरीय मानचित्रण और जनजातीय गहराई-मापन ध्वनिकी

7. उपचारात्मक और सूक्ष्मजीवी लेखन

1. कल्याण-कल्पनादर्श (वैलनेस यूटोपिया) में समुद्री-जल चिकित्सा (थैलासोथेरेपी): समुद्री जल-चिकित्सा

2. न्यूट्रिनो पहचान की काव्यात्मकता
3. मैंग्रोव भूलभुलैया और ज्वारीय पथ: तटीय कथा-साहित्य में प्रकंदयुक्त (राइजोमैटिक) भूगोल
4. द्वीपवासियों के लोककथानक और महासागरीय भँवर: स्वदेशी आख्यान
5. मध्यवेलापवर्ती मंडल या गोधूलि क्षेत्र (मेसोपेलाज़िक जोन) की आशंकाएँ

8. भारतीय ज्ञान-परंपरा (IKS) के अंतर्गत समुद्र-विज्ञान और जलीय मानविकी (ब्लू ह्यूमैनिटीज़) के अंतर्संबंध

1. पुराणों के सप्त-सागरों में भौतिक समुद्र-विज्ञान: प्राचीन ग्रंथों में वर्णित मिथकीय समुद्र और आधुनिक लवणता व धाराओं का साम्य
2. महासागरीय धाराएँ और मानसूनी नौसंचालन: कौटिल्य के अर्थशास्त्र में तटीय नौपरिवहन और पवन-रूपों के संकेत
3. वैदिक प्लवक-ज्ञान और जैविक समुद्र-विज्ञान: वाजसनेयी संहिता में समुद्री वनस्पति और जीव-जगत का सूक्ष्म संकेत
4. विनय पिटक और जल-तल स्थलाकृति, गर्तों तथा महाद्वीपीय शेल्फ़ के प्राचीन सर्वेक्षण: पारंपरिक बौद्ध बाथीमेट्री
5. वैदिक सप्त-द्वीप भूगोल और साहित्यिक परिदृश्य: सप्तद्वीप ब्रह्मांड-कल्पना
6. जैन परंपरा और पुराणिक ज्वार: 'आवश्यकसूत्र' में मिथक और समुद्री घटना

महत्वपूर्ण तिथियाँ:

- पंजीकरण प्रारंभ: 15 मार्च 2026
- **सार-संक्षेप (Abstract) जमा करने की अंतिम तिथि: 15 सितम्बर 2026**
- स्वीकृति की सूचना: सार-संक्षेप प्राप्त होने के 15 दिनों के भीतर (चयनित प्रतिभागी इसके पश्चात पंजीकरण कर सकते हैं)
- पूर्ण शोध-पत्र (प्रथम प्रारूप) जमा करने की अंतिम तिथि: 30 अक्टूबर 2026

महत्वपूर्ण निर्देश:

- 300 शब्दों का सार-संक्षेप 5 बीज शब्दों सहित निम्न ईमेल पर भेजें: md@efsle.org
- ईमेल के विषय (Subject Line) में "ICOBH 2026" या "Andaman Conference" अवश्य लिखें।
- सार-संक्षेप निम्न गूगल फ़ॉर्म के माध्यम से भी भेजा जा सकता है:

  https://forms.gle/MrLTrbgax9mNJB1w7

- 12 प्वाइंट Times New Roman फ़ॉन्ट तथा देवनागरी हेतु Arial Unicode MS का उपयोग करें और फुटनोट से बचें।

- पूर्ण शोध-पत्र 6000–10000 शब्दों के भीतर होना चाहिए (संदर्भ सूची और सार-संक्षेप को छोड़कर)। संदर्भन के लिए नवीनतम MLA शैली का उपयोग करें।
- चयनित शोध-पत्र ISBN सहित एक संपादित पुस्तक में प्रकाशित किए जाएंगे। यह सम्मेलन कार्यवाही के रूप में नहीं, बल्कि एक पूर्ण संपादित पुस्तक के रूप में प्रकाशित होगी; प्रस्तावित प्रकाशक Bloomsbury या Springer Nature होंगे।
- प्रथम प्रारूप की प्रारंभिक समीक्षा के बाद चयनित शोध-पत्रों को प्रकाशन हेतु विचारार्थ रखा जाएगा। यदि आवश्यक हुआ तो संशोधित/संपादित संस्करण की माँग सम्मेलन के बाद ईमेल द्वारा की जाएगी, क्योंकि यह प्रकाशन सम्मेलन-उपरांत संपादित ग्रंथ के रूप में नियोजित है।
- लेखकगण से अनुरोध है कि वे अपना संक्षिप्त परिचय (तृतीय व्यक्ति होने पर, 100 शब्दों से अधिक नहीं) अलग से संलग्न करें।

पंजीकरण श्रेणियाँ:

- ईएफ़एसएलई सदस्यों और गैर-सदस्यों, दोनों के लिए पंजीकरण शुल्क पृथक-पृथक निर्धारित है।

Andaman International Conference (ICOBH 2026)
Registration Details (Non-Members)

Participants	Early Registration (Before 31st August)		Late Registration (After 31st August)	
	Registration Fee	Accommodation Charges	Registration Fee	Accommodation Charges
Faculties/Professional & Independent Scholars	INR 4000	INR 15000	INR 6000	INR 18000
Research Scholars	INR 3000	INR 12000	INR 5000	INR 15000
PG Students	INR 2000	INR 10000	INR 4000	INR 12000
Foreign Nationals	$ 400	$ 750	$ 600	$ 950
Participants Only (Not presenting paper)	INR 1000 $ 100	INR 10000 $ 750	INR 3000 $ 300	INR 12000 $ 950
Accompanying person	INR 1000 $ 100	INR 10000 $ 450	INR 4000 $ 350	INR 12000 $ 650

***Islander (A&N Islands) PG Students are exempted from any registration fee. The registration fee for the faculties and professionals is INR 2000 (Two Thousands Only).*

- EFSLE के आजीवन सदस्य जो 9–12 दिसंबर तथा 14–15 दिसंबर, दोनों आयोजनों में भाग लेना चाहते हैं, वे किसी भी प्रकार की आगे की असुविधा या भ्रम से बचने के लिए पंजीकरण से पूर्व कार्यक्रम समन्वयक से संपर्क करें।

- यह ICOBH 2026 एक सप्ताह की अवधि के Ecoscimatic Retreat Programme का हिस्सा है, जिसे शैक्षणिक आयोजनों, बौद्धिक विमर्श तथा भ्रमण एवं पर्यटन—इन सभी को एक साथ समाहित करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है।

Andaman International Conference (ICOBH 2026) Registration Details				
EFSLE Members (For Lifetime Members only)				
Participants	Early Registration (Before 31st August)		Late Registration (After 31st August)	
	Registration Fee	Accommodation Charges	Registration Fee	Accommodation Charges
Faculties / Professional & Independent Scholars	INR 650	INR 10000	INR 4000	INR 15000
Research Scholars	INR 450	INR 8000	INR 3000	INR 12000
PG Students	INR 300	INR 6000	INR 1500	INR 10000
Foreign Nationals	$ 100	$ 450	$ 350	$ 650
Participants Only (Not presenting paper)	INR 650 $ 50	INR 6000 $ 450	INR 5000 $ 250	INR 7000 $ 650
Accompanying person (Non-member)	INR 1000 $ 100	INR 8000 $ 450	INR 4000 $ 350	INR 12000 $ 650
***Note:** *The Islander (A&N Islands) students (PG) are exempted from any registration fee.*				

पंजीकरण शुल्क का विस्तृत विवरण ईएफ़एसएलई की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

आयोजन समिति:

मुख्य संरक्षक:

डॉ. चन्द्र भूषण कुमार, IAS, मुख्य सचिव, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह, भारत

संरक्षक:

प्रो. (डॉ.) पी. प्रकाश बाबू, माननीय कुलपति, पांडिचेरी विश्वविद्यालय

प्रो. (डॉ.) बी. वी. शर्मा, निदेशक, भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार

संयोजक:

- प्रो. जी. पद्मावती, समुद्र अध्ययन एवं समुद्री जीवविज्ञान विभाग, पांडिचेरी विश्वविद्यालय, श्री विजय पुरम परिसर, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह

- डॉ. दिलीप कुमार जायसवाल, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, विवेकानंद कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय; मानद प्रबंध निदेशक, ईएफ़एसएलई, नई दिल्ली, 00-91-9899075465

आयोजन सचिव:

- डॉ. के. ए. जयराज, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, समुद्र अध्ययन एवं समुद्री जीवविज्ञान विभाग, पांडिचेरी विश्वविद्यालय, श्री विजय पुरम परिसर, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह

सह-संयोजक:

- डॉ. सत्य प्रकाश, विभागाध्यक्ष एवं सहायक प्रोफेसर, भूगोल विभाग, महात्मा गांधी राजकीय महाविद्यालय, मायाबंदर, उत्तर-मध्य अंडमान, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह
- डॉ. टी. गणेश, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, समुद्र अध्ययन एवं समुद्री जीवविज्ञान विभाग, पांडिचेरी विश्वविद्यालय, श्री विजय पुरम परिसर, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह
- डॉ. ऋषिकेश कुमार सिंह, अध्यक्ष, ईएफ़एसएलई, नई दिल्ली; मोबाइल: 00-91-9205037771
- डॉ. जोचिबेड विंसेंट, सहायक प्रोफ़ेसर, अंग्रेज़ी विभाग, अंडमान कॉलेज, श्री विजय पुरम, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह; क्षेत्रीय सचिव, ईएफ़एसएलई

मुख्य समन्वयक:

- डॉ. उदय कुमार, सहायक क्षेत्रीय निदेशक, इग्नू, श्री विजय पुरम, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह

समन्वयक:

- प्रो. (डॉ.) आर. मोहनराजु, समुद्र अध्ययन एवं समुद्री जीवविज्ञान विभाग, पांडिचेरी विश्वविद्यालय, श्री विजय पुरम परिसर, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह
- प्रो. (डॉ.) के. धरनीराजन, अध्यक्ष, तटीय आपदा प्रबंधन विभाग, पांडिचेरी विश्वविद्यालय, श्री विजय पुरम परिसर, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह
- डॉ. किरण भैरन्नावर, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, भूगोल विभाग, डीएसई, दिल्ली विश्वविद्यालय; सचिव, ईएफ़एसएलई, नई दिल्ली
- डॉ. श्वेता एंटनी, सहायक प्रोफ़ेसर, अंग्रेज़ी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय; अतिरिक्त सचिव, ईएफ़एसएलई, नई दिल्ली

आयोजन समिति सदस्य:

- डॉ. आशा तिवारी, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, संस्कृत विभाग, भारती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, मुख्य समन्वयक, ईएफ़एसएलई, नई दिल्ली

- प्रो. (डॉ.) सिद्धार्थ सिंह, अंग्रेज़ी विभाग, श्री जेएनएमपीजी कॉलेज, लखनऊ; ज़ोनल सचिव, उत्तर-पूर्व क्षेत्र, ईएफ़एसएलई
- डॉ. एमिल्डा रोज़मीन, सहायक प्रोफ़ेसर (अतिथि), समुद्र अध्ययन एवं समुद्री जीवविज्ञान विभाग, पांडिचेरी विश्वविद्यालय, श्री विजय पुरम परिसर, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह
- श्री ब्रजेश कुमार, कार्यकारी परिषद सदस्य, ईएफ़एसएलई, नई दिल्ली, अनुवादक, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
- प्रो. कविता अरोड़ा, भूगोल विभाग, शहीद भगत सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
- डॉ. मंजुलता राव, प्राचार्या, टैगोर गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, श्री विजय पुरम, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह
- डॉ. एस. जयकुमार, प्राचार्य, अंडमान कॉलेज (ANCOL), श्री विजय पुरम, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह
- प्रो. (डॉ.) हुमा याक़ूब, अंग्रेज़ी विभाग, MANUU, लखनऊ
- डॉ. रश्मि रानी आनंद, सहायक प्रोफ़ेसर, सेंटर फ़ॉर अफ्रीकन स्टडीज़, स्कूल ऑफ़ इंटरनेशनल स्टडीज़, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (JNU)
- डॉ. भारती राय, अंग्रेज़ी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय
- डॉ. राज गौरव वर्मा, अंग्रेज़ी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय
- डॉ. साइमा मेहदी, अंग्रेज़ी विभाग, शिया कॉलेज, लखनऊ
- श्रीमती विजया लक्ष्मी, कोषाध्यक्ष, ईएफ़एसएलई, नई दिल्ली
- डॉ. ऐश्वर्या मैनडोला, क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट, नई दिल्ली

लॉजिस्टिक्स एवं टूर समिति:

- श्री आनंद राव, श्री विजय पुरम, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह
- श्री कुमार पार्थ, कार्यक्रम समन्वयक, ईएफ़एसएलई, नई दिल्ली, **9953833313**

उपयोगी लिंक:

- पंजीकरण शुल्क भुगतान हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।
- ईएफ़एसएलई बैंक खाता विवरण:

https://www.efsle.org/efsle-account-detail/

विस्तृत जानकारी: https://www.efsle.org/andaman-conference-2026/

इस नैसर्गिक द्वीप पर आप सभी का हार्दिक स्वागत है